International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 26-04-2020; Accepted: 19-05-2020; Published: 28-05-2020
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 3; 2020; Page No. 43-45

बाल संस्कारः राष्ट्रीयता की पाठशालाः देवपूत्र

सोनाली नरगून्दे [1], मनीष काले [2]

[1] एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला,देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

[2] अतिथि व्याख्याता, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला,देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौरं, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

देश में प्रिंट मीडिया पर वेब और सोशल मीडिया का खतरा मंडरा रहा है। प्रिंट समाचार पत्रों की प्रसार संख्या में लगातार कमी आ रही है और वेब मीडिया अपने पैर पसार रहा है। सोशल मीडिया की दस्तक ने समाचार पत्रों को और भी कमजोर कर दिया है। ऐसे में समयावधि में निकलने वाली पत्रिकाओं को लेकर कई सवाल खड़े हो जाते है। भविष्य तो दूर की बात है, वर्तमान में पत्रिकाओं की प्रसार संख्या में बढ़ोत्तरी की बात बेमानी सी लगती है। ऐसे में इंदौर से निकलने वाली बाल पत्रिका 'देवपूत्र' इसका अपवाद बनी हुयी है। लगातार बंद होने के संकट से गुजर रही पत्रिकाओं के बीच देवपूत्र सर्वाधिक प्रसार संख्या वाली पत्रिकाओं में शुमार है। देवपूत्र, भारत की उन पत्रिकाओं के लिये एक आदर्श उदाहरण है जो किसी न किसी कारण से बंद होने की कगार पर पहुंच गयी है। देवपूत्र वास्तव में पत्रिकाओं के लिये संजीवनी है, जिसकी रणनीति अन्य पत्रिकाओं के लिये जीवित रहने का आधार हो सकती है। प्रस्तुत शोध पत्र में देवपूत्र के विकास से लेकर प्रबंधकीय नीतियों पर प्रकाश डाला गया है।

मूल शब्दः पत्रिका, बच्चे, संस्कार, प्रबंधन, प्रभाव, बदलाव, आदर्श

प्रस्तावना

किसी भी समाज की नींव उसके संस्कार होते है। संस्कार यदि गहरे होते है तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि उस समाज की नींव भी मजबूत ही होगी। संस्कारों का कमजोर होना ही समाज के पतन का कारण होता है। दरअसल संस्कार से ही नजरिया का सृजन होता है और यह नजरिया ही विकास की घूरी तय करता है। सामाजिक उत्थान पर नजर डाले तो पता चलता है कि उस समाज ने ज्यादा उन्नति की है, जिनका नजरिया विस्तृत और गहरा था। इसके ठीक उल्टा वह समाज पतन की ओर गया, जिसका कोई नजरिया ही नहीं था। संस्कारवान नजरिये के साथ ही यदि राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना का विकास भी हो जाता है तो जीवन मूल्य गहरे होते चले जाते है और व्यक्ति देश के विकास में पूरी ईमानदारी के साथ खड़ा नजर आता है। उच्च जीवन मूल्यों का रोपण यदि बचपन में ही कर दिया जाता तो एक समय के बाद पूरे समाज में एक साथ और एक जैसा बड़ा बदलाव नजर आता है। ये जीवन मूल्य ही पूरी व्यवस्था में सामजिक बदलाव की क्रांति ला देते है। बच्चों में उच्च जीवन मूल्यों को रोपने में बाल पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। ऐसी ही एक बाल पत्रिका का प्रकाशन इंदौर से हो रहा है, जिसका नाम देवपूत्र है। बच्चों में सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीयता का भाव जगाने के उद्देश्य से आरंभ हुयी यह पत्रिका आज संस्कारों की पाठशाला है। 1 दिसम्बर 1985 से बाल कल्याण न्यास, इंदौर द्वारा यह प्रकाशित की जाती है, जो देश की सर्वाधिक प्रसार संख्या वाली बाल पत्रिका है। देवपूत्र की प्रसार संख्या 3,71,438 प्रति माह के करीब है।

अधिकांश बाल पत्रिकाओं की आधारभूमि व्यवसायिक रही। बड़े–बड़े घराने पत्रिकाएं प्रकाशित करते थे। टाईम्स जैसे घराने थे, उन्होंने बाल पत्रिकाएं निकाली अथवा शासन ने निकाली, केंद्र सरकार ने निकाली या फिर राज्य सरकारों की अपनी बाल पत्रिकाएं निकलती रही। इन पत्रिकाओं का आधार अलग प्रकार का था। देवपुत्र पत्रिका का प्रारंभ शिक्षा क्षेत्र से हुआ था। शिक्षा के क्षेत्र का एक बड़ा नाम था रोशनलाल सक्सेना। पाठ्यक्रम से गायब हो रही राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना वाली सामग्री को एक पत्रिका के माध्यम से बच्चों के बीच एक बार फिर ले जाने का मूल विचार सक्सेनाजी का था। उनके इस विचार को उनके ही कुछ सहयोगियों ने सराहा। इन लोगों का भी मत था कि आजादी के बाद से 1960 तक पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक चेतना का मूलभूत स्वर हुआ करता था। ये माखनलाल चतुर्वेदी का युग था, महादेवी वर्मा का युग था। इस समयावधि के बाद ये सभी स्वर पाठ्यक्रम से दूर होते चले गए। शिक्षा क्षेत्र के ही लोगों को लगा कि पाठ्यक्रम से इतर हम बच्चों को ऐसी सामग्री दे, जो उसके जीवन मूल्य को राष्ट्रीयता से जोड़े और राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक चेतना के साथ उनका विकास हो। ताकि देश के विकास में बच्चे पूरी ईमानदारी से खड़े हो सके। सक्सेनाजी का मूल विचार देवपुत्र का आधार बना। ऐसा कहा जा सकता है कि बच्चों को श्रेष्ठ नागरिक बनाने की दिशा में देवपुत्र की यह ठोस सोच थी। पाठ्यक्रम में तो इस तरह के प्रमोशन कम होते जा रहे थे। ऐसे में इस विषय पर केंद्रित एक पत्रिका प्रारंभ करने की सोच ने जन्म लिया। पहले योजना बनी की एक वार्षिक पत्रिका ज्यादा पन्नों की शुरू की जाए और उसमें ऐसी सामग्री प्रकाशित की जाए जो बच्चों के साथ ही शिक्षकों को भी दिशा देने का काम करेगी। शिक्षक भी बच्चों को ज्यादा से ज्यादा इस तरह की सामग्री पढ़ाकर उन्हें दिशा दे सके। सामग्री पूरी तरह से बच्चों पर ही केंद्रित करने का निर्णय लिया गया। शुरूआत स्मारिका के रूप में हुई, जिसने बाद में वार्षिक पत्रिका का रूप ले लिया। यह समय था 1979। समय के साथ सामग्री की मांग भी बढ़ी। शिक्षकों–बच्चों का रूझान बढ़ा तो पत्रिका का समय घटाकर उसे मासिक पत्रिका के रूप में स्थापित किया गया। मासिक पत्रिका हो जाने के बाद भी इसका पंजीयन नहीं हुआ था। बाद में 1 दिसंबर 1985 में ग्वालियर में किया गया। तत्कालीन संपादक श्री विश्वनाथ मित्तल ने इसका पंजीयन करवाया। इसके साथ ही देवपुत्र की यात्रा शुरू हुई।

समय के साथ इसकी सख्या बढ़ती चली गई। देवपुत्र का

सम्पादन ग्वालियर से होता था और वितरण भोपाल से। प्रबंधन और सम्पादक दोनों काम सक्सेनाजी ही देखते थे। समय के साथ दोनों काम एक ही व्यक्ति के पास होने से कुछ समस्याएं खड़ी होने लगी। 1991 में इसकी व्यवस्था में थोड़ा परिवर्तन किया गया। इसका काम दो हिस्सों में बांट दिया गया। सम्पादकीय कार्यालय इन्दौर रखा गया और सम्पादक का जिम्मा श्री कृष्णकुमार अष्ठाना को सौंपा गया। प्रबंधन और वितरण का काम भोपाल से किया जाने लगा और शांताराम भवालकर को इसकी जिम्मेदारी दी गयी। कुछ समय के बाद दोनों कार्यालय इन्दौर से ही संचालित होने लगे।

प्रसार – प्रसार पूरी तरह से व्यावसायिक गतिविधि मानी जाती थी और पत्रिकाओं को आसानी से पाठक मिलते नहीं थे। इसलिए देवपुत्र प्रबंधन ने इसकी प्रसार योजना को बदला। व्यक्तिगत ग्राहक बनाने, कमीशन देकर दुकानों से पत्रिका का वितरण करने या फिर घर तक हॉकर के माध्यम से पहुचाने जैसे पारम्परिक तरीकों को नकारते हुए एक नई व्यवस्था का अपनाया गया। लगभग सभी पत्रिकाएं एक–एक बिकती थी। एक–एक कॉपी पर हॉकर को कमीशन दिया जाता था। देवपुत्र के वार्षिक या आजीवन सदस्य ही बनाए गाए। साथ ही शुल्क जमा होने के बाद पत्रिका पहुंचायी जाती थी। इस तरह की योजना पर काम करने वाली देवपुत्र अपने आप में एकमात्र पत्रिका है। लोगों ने भी इसकी व्यवस्था को सहजता से स्वीकार कर लिया क्योंकि इसका मूल्य अत्यंत कम था। खास बात यह रही कि देवपुत्र ने विद्यालयों को प्रसार का माध्यम बनाया। विद्यालय भी वो जो किसी सामाजिक संस्थाओं द्वारा संचालित होते है और वे बच्चों के संस्कार की चिंता करते हैं प्रबंधन ने फोकस किया कि गायत्री परिवार संस्कारों पर काम करता है। विवेकानंद केंद्र, कन्याकुमारी के पूरे पूर्वोत्तर में शैक्षणिक संस्थान चलाते थे। श्रीश्री रविशंकरजी, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज द्वारा संचालित वैदिक विद्यालयों को फोकस किया। विद्या भारती नामक एक बड़ा संगठन है, जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहा है। ऐसी संस्थाओं को सूचीबद्ध कर उनसे सम्पर्क किया और देवपुत्र पहुंचायी। इन सभी संस्थाओं ने देवपुत्र को बाल साहित्य जगत में स्थापित कर दिया। आज स्थिति यह है कि भारत का एक भी ऐसा प्रान्त नही हैं, जहां देवपुत्र नहीं पहुंच रही हो। देवपुत्र पूरे भारत में प्रसारित की जाती है, जिसमें से कुछ राज्य में प्रसार संख्या ज्यादा है। नई दिल्ली, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान में ब्यूरों संचालित होते है और प्रतिनिधि भी नियुक्त किए गए है। ये ब्यूरों और प्रतिनिधि भी देवपुत्र को अपने पाठकों तक पहुचाने में मदद करते हैं।

विज्ञापन – पहले तो विज्ञापन नहीं के बराबर थे, लेकिन समय के साथ इस पर भी फोकस किया जा रहा है। प्रयास किया जाता है कि ऐसा कोई भी विज्ञापन नहीं ले, जो बच्चों पर गलत असर डाले। विशेष कर व्यसनों से जुड़ी सामग्री प्रकाशित नहीं की जाती है। साथ ही स्वदेशी अपनाओं पर जोर दिया जाता है। परिणाम यह है कि कई बहु राष्ट्रीय कंपनियों के विज्ञापन आने के बाद भी प्रकाशित नहीं किये जाते है। प्रबंधन नहीं चाहता है कि कोई शीतल पेय का विज्ञापन प्रकाशित किया जाए और उसे देखकर बच्चे उसे पीये और अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करें। ऐसे कई विज्ञापन आए, लेकिन उनको प्रबंधन ने प्रकाशित नहीं किया।

आर्थिक व्यवस्था – अर्थ तंत्र पूरी तरह प्रसार आधारित है। कुछ विज्ञापन लिये जाते है। सरकारी विज्ञापन भी आते है, लेकिन वह काफी कम संख्या में होते है। सामान्यतः राज्य और केंद्र सरकारों ने 33 प्रतिशत विज्ञापन का नियम बना रखा है, लेकिन देवपुत्र में तो 3–4 प्रतिशत ही विज्ञापन प्रकाशित किये जाते है।

विषय वस्तु– सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना जागृत करना देवपुत्र का उद्देश्य रहा है। राष्ट्र भाव के साथ अच्छा नागरिक बनने का भाव बच्चों में कूट–कूट कर भरा जाए। आज की नई शिक्षा प्रणाली में बच्चा अर्थ आधारित होता जा रहा है। इसी कारण बच्चा कॅरियर पर फोकस कर रहा है। वह केवल पैसों के बारे में ही सोच रहा है। साथ ही बाल साहित्य या बाल पत्रकारिता में विभिन्नता आ गयी है कि सूचनाओं का बवड़र खड़ा हो रहा है। अधिकांश अखबारों में जो बाल साहित्य छप रहा है, उनमें लेखकों के नाम नहीं होते है या यूं कहे कि उसकी कोई प्रामाणिकता नहीं होती है। कहानी छपी है, लेकिन कोई लेखक नहीं है यानी इंटरनेट या कहीं से उठाकर कहानी छाप दी गयी है। बिना लेखकों के सामग्री का प्रकाशन अपराध है। अखबारों के साथ ही पत्रिकाएं भी यह कर रही है। बच्चों में सृजनात्मक खत्म हो रही है या उन्हें मौका नहीं मिल रहा है। पहले बच्चे कहानी, कविताएं तैयार करते थे। चित्र पहेली तैयार करते थे, जिनसे उनका विकास होता था। आज इंटरनेट से सामग्री लेने से वह सब खत्म होता जा रहा है। देवपुत्र इससे बचता है। इंटरनेट से सामग्री लेना पड़े, तो वह भी प्रबंधन का अंतिम चयन होता है। देवपुत्र प्रबंधन का प्रयास होता है कि साहित्य, चित्रकारों, कहानीकारों को कैसे आगे लाया जाए। दूसरा प्रयास यह किया जाता है कि सांस्कृतिक परिदृश्य को बच्चों कैसे भी पहुंचाया जाए। सामान्यतः पहेली में यह देखने में आता है कि एक तरफ कुत्ता बना हुआ है दूसरी तरफ हड्डी है। कुत्ते को हड्डी तक पहुंचाना होता है। मूल प्रश्न यह है कि बच्चा इस पहले को हल कर दिमाग का विकास कर रहा है, लेकिन मूलतः उसके दिमाग में बैठा है कि कुत्ते को हड्डी तक पहुचाया जाए। इससे प्राप्त क्या कर रहा है बच्चा। इसका विचार आज नहीं हो रहा है। इंटरनेट पर मिला और पत्रिका में उसे प्रकाशित कर दिया। इसके विपरीत देवपुत्र समाज से जुड़े मुद्दों को लेते है। जैसे श्री सत्यमित्रानंदजी ने वाल्मिकी समाज के लोगों के साथ सिंहस्थ में स्नान करने की बात कही थी। देवपुत्र ने पहेली बनायी कि एक छोर पर सत्यमित्रानंनजी खड़े है और दूसरे छोर पर वाल्मिकी समाज के लोगों तक पहुंचाया जाए। दरअसल देवपुत्र की हर सामग्री बच्चो को जीवन मूल्य सिखाती है। दया, करूणा, सहयोग सिखाने वाली सामग्री ही प्रकाशित की जाती है। सामग्री के माध्यम से हम बच्चों को कैसे समाज से जोड़े, इस पर भी फोकस किया जाता है। आज सूचना क्रांति के दौर में बच्चों को कई विश्व रिकॉर्ड तो पता है, लेकिन उसे यह नहीं पता है कि मैदान में खेलते समय यदि वह गिर जाता है और उसे चोट लग जाती हे तो उसे हल्दी से ठीक किया जा सकता है। ज्ञान और सूचना के बीच एक अंतर स्थापित करने का काम देवपुत्र जैसी बाल पत्रिकाओं कर रही है।

देवपुत्र की भाषा उच्च स्तर की और सरल है ताकि बच्चों को समझने में कोई परेशानी नहीं हो। प्रस्तुतिकरण भी इतना प्रभावी है कि बच्चे इसकी ओर प्रभावित हो ही जाते है। एक बानगी– ''कुछ अपवादों को छोड़कर आज विश्व में सब देश आजाद है। किसी भी देश की स्वतंत्रता की बड़ी पहचान है, उसका संयुक्त राष्ट संघ की सदस्यता के योग्य होना। वर्तमान में इस वैश्विक संख्या के सदस्य देशों की संख्या 193 है। संभव है– भविष्य में कुछ और उपनिवेशों के स्वतंत्र होने पर संख्या 200 होने तक पहुंच जाये। स्वतंत्र देशों के आकार प्रकार में जमीन आसमान का अंतर है। क्षेत्रफल के आधार से विचार करें तो आज रूसी परिसंघ विश्व का सबसे बड़ा तथा वेटिकन सबसे छोटा है। यदि पहले की हाथी के रूप में कल्पना करें, तो दूसरा उसकी तुलना में चींटी से भी छोटा होगा। ''

कहानियों के माध्यम से ऐसे विषय हम पत्रिका के माध्यम से

बच्चों तक पहुंचाते है, जो उन्हें
जीने की कला सीखाते है। एक बागनी– '' छठी बात, अगर पतंग क्षतिग्रस्त हो जाए, उसमें छेद हो जाए या डोर कमजोर पड़ जाए तो पतंग ठीक से नहीं उड़ सकती। उसी तरह हमारे संबंध दूसरों के साथ तभी अच्छे रह सकते है, जब हमारा उनके साथ तालमेल दुरूस्त हो''– दादी ने बताया। ''हॉ दादी! इसलिए कई बार लोगों के साथ हमारी पटरी ठीक नहीं बैठ पाती–'' कुश ने स्वीकारा। '' सबके साथ संतुलन साधना बिठाना आसान नहीं होता पर कोशिश तो कर सकते है''– दीदी ने सकारात्मक रास्ता दिखाया। ''
कविताओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है, जिसमें भी बच्चों को कुछ सीख या जानकारी देने की कोशिश की जाती है।

''अगर मैं वृक्ष बनता, तो कितना अच्छा होता।
खड़ा खड़ा लहराता, खूब हवा में देता।
मेरी हरियाली देखकर, सब मेरे पास आते।
मेरे सुन्दर फूल महकते, स्वादिष्ट फल सब खाते।''

इसका साहित्य वैसे चार श्रेणियों में विभाजित है। शिशु, बाल, तरूण और किशोर अवस्था इसकी श्रेणियां है। इसी को ध्यान में रखकर सामग्री का चयन और प्रकाशन किया जाता है। शिशु अवस्था वाले बच्चों के लिए स्वर आधारित साहित्य प्रकाशित किया जाता है, तो तरूणों के लिए कॅरियर गाइडेंस जैसी सामग्री भी प्रकाशित की जाती है। सभी श्रेणियों का ध्यान रखकर सामग्री का चयन किया जाता है। सभी श्रेणियों के लिए सामग्री का प्रतिशत तय है। हर एडिशन में हर श्रेणी की सामग्री का प्रकाशन किया जाता है। एक बानगी– '' देश की राजधानी दिल्ली में प्रगति मैदान के गेट नंबर एक के ठीक दायी तरफ स्थित एक केंद्र है जो इतिहास, मनोरंजक और प्रशिक्षण का मिला जुला एक अद्भुत प्रस्तुतीकरण है। इसमें भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के पांच हजार वर्षों की कहानी के साथ सौ से अधिक संचालन योग्य प्रदर्श यानि एक्जिबिट्स है, गतिशील तारामण्डल है, और इन सबसे साथ स्वचालिक रूप से उपर–नीचे होती और बेहद घुमावदार स्टक्चर पर भागती दौड़ती व कुशल कलाबाजों सा प्रदर्शक करती सोलह ऐसी गेंदे यहां आने वाले हर दर्शक को आश्चर्य चकित कर देती है।''

शुल्क – आर्थिक योजना यह भी थी कि इसकी लागत पर कम से कम लाभ लिया जाए। आज तक इसी सिद्धांत पर न्यास काम कर रहा है। आज भी लगभग सभी बाल पत्रिकाओं का मूल्य 30–35 रूपये के बीच है, देवपुत्र उस स्थिति में 130 रूपये में वार्षिक सदस्यता देती है। प्रबंधन खर्च निकालने के बाद एक पत्रिका पर मात्र 35 पैसे बचते है।

बदलाव– समय–समय पर पत्रिका के कलेवर में भी बदलाव किया जाता है। शुरूआत में देवपुत्र ट्रेडर पर छपती थी। सिंगल कलर का उपयोग शुरू किया गया, जो समय के साथ डबल कलर में बदल गा। आवरण पेज कलर किया गया। तकनीक विकसित हुई तो पूरी पत्रिका ही कलर में निकाली जाने लगी। पेपर भी सबसे उच्च गुणवत्ता का हाई ब्रेड उपयोग में लाया जाता है।

स्तंभ
कहानी, कविता, देव दर्शन, बाल शहीदों की गौरवगाथा, आरोग्य, बाल फिल्म परिचय, आपकी पाती, पुस्तक परिचय, हमारे राजकीय पशु, खेल–खिलाड़ी, कॅरियर, दिशा, रोचक जानकारी, पहेलियां, चुटकुले, वर्ग पहेली, बाल साहित्य समाचार, चित्रकला, व्यंग्य चित्र, जादुई प्रयोग, अपनी बात, लघु कथा, प्रसंग, आलेख, चित्रकथाएं, बताओ तो जाने, मस्तिष्क का व्यायाम, कॉर्टून।
देवपूत्र कीं सामग्री का प्रभाव बच्चों पर देखने को मिलता है। पत्रिका के माध्यम से प्रबंधन ने स्वदेशी अपनाने और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों का बहिष्कार करने संबंधी सामग्री प्रकाशित की थी। इसका परिणाम यह हुआ कि बच्चों ने अपने–अपने स्कूलों में स्वदेशी क्लब का गठन किया और यहां से स्वदेशी अपनाने का संदेश समाज तक फैलाया। इसी तरह पौधारोपण की पहल की, जिसे सकारात्मक सहयोग मिला। हजारों स्कूलों में
बच्चे अपने नाम का पौधा न केवल लगा रहे है, बल्कि तीन साल तक उसका संरक्षण भी कर रहे हैं। ऐसा ही एक प्रयास हिन्दी भाषा को लेकर किया। आज देश के कई स्कूलों में विज्ञान प्रयोगशाला की तरह ही भाषा प्रयोगशाला स्थापित की गयी, जिससे बच्चों में हिंदी के प्रति गौरव का भाव पैदा हुआ।

संदर्भ सूची

1. दीक्षित, आर., (2017). जवजागरण में सरस्वती पत्रिका की भूमिका. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च. वॉल्यूम–31. इश्यू–3. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.हिंदी जर्नल.कॉम.
2. दवे, वी., (2010). समकालीन हिन्दी बाल पत्रिकाओं के संदर्भ में देवपुत्र का विशिष्ट अनुशीलन. विक्रम विश्वविद्यालय. उज्जैन.
3. विक्रम, एस., (1992). हिन्दी बाल पत्रकारिता : उद्भव और विकास साहित्यवाणी. इलाहाबाद।
4. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.देवपूत्र.कॉम.
5. देवपूत्र, बाल पत्रिका, इंदौर